दिनांक 09 जनवरी, 2010 को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा आयोजित चतुर्थ दीक्षान्त समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का सम्बोधन

मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, मानद उपाधि से विभूषित होने वाले सम्मानीय अतिथि, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, कार्यपरिषद् सदस्य, विद्या परिषद् सदस्य, विद्वज्जन, पत्रकार बन्धुओं, एवं विद्यार्थियों,

मुझे शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक नगरी इलाहाबाद में स्थित उच्चतर ज्ञान के इस विश्वविद्यालय में आकर अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, जहाँ युवाओं के उत्साह और विद्वज्जनों के अनुभव का संगम होता है। मुक्त विश्वविद्यालय विचारों का एक ऐसा क्रीड़ा स्थल है और एक ऐसी जगह है जहाँ पर मानव

मस्तिष्क को अतीत की उपलब्धियों, वर्तमान के प्रयासों और भविष्य की संभावनाओं की आलोचनात्मक संवीक्षा करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। यह मुक्त चिन्तन का एक मंच है। अतः प्रत्येक मुक्त एवं स्वस्थ समाज को अपने विश्वविद्यालयों को आवश्यक रूप से इस प्रकार के मुक्त वैचारिक अनुसंधान की अनुमति देनी चाहिए। इसी तर्क के आधार पर, उच्च ज्ञान के स्थलों का यह कर्तव्य है कि इस उत्तरदायित्व का पूरी तरह से निर्वहन करें।

आज मैं उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षान्त समारोह के आयोजन के अवसर पर उपाधि प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। मेरी कामना है कि आपका मार्ग प्रशस्त हो।

इस अवसर पर मैं इस विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को भी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के नाम से 1999 में स्थापित यह विश्वविद्यालय अपने दस गौरवशाली वर्ष पूर्ण कर चुका है। इस दौरान नव प्रवेशित शिक्षार्थियों की संख्या बढ़कर 21 हजार हो गई है। विश्वविद्यालय प्रदेश के हर कोने में 430 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से ''छात्र जहाँ, हम वहाँ'' के प्रत्यय के संकल्प को अभिप्राप्त करने का अनवरत प्रयास कर रहा है। यह विश्वविद्यालय प्रदेश के सुदूर क्षेत्रों में स्थित कृषक, कृषि श्रमिक, घरेलू महिलाओं को विभिन्न पाठ्यक्रमों की शिक्षा 'दूरस्थ शिक्षा' के माध्यम से प्रदान कर रहा है।

वर्तमान में इस विश्वविद्यालय में विभिन्न स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त अनेकानेक डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कार्यक्रम भी संचालित हो रहे हैं। इसमें बी.एड, बी. एड–विशिष्ट शिक्षा, पत्राकारिता एवं जनसंचार, पुस्तकालय विज्ञान, एम0बी0ए0, एम0सी0ए0, फैशन डिजाइनिंग, टैक्सटाइल डिजाइनिंग जैसे रोजगार मूलक एवं समय सापेक्ष पाठ्यक्रमों का विशेष महत्व है। विश्वविद्यालय पंचायती राज, स्वास्थ्य शिक्षा, एड्स जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण आदि कार्यक्रमों का संचालन भी कर रहा है। ये सभी कार्यक्रम निश्चय ही विश्वविद्यालय के सामाजिक उत्तरदायित्व की पूर्ति हेतु सराहनीय प्रयास हैं। विश्वविद्यालय में वर्तमान में 80 कार्यक्रमों की शिक्षा प्रदान की जा रही है। यहाँ की शिक्षण पद्धति ऐसी है जिसमें स्व–अध्ययन एवं परामर्श सत्रों द्वारा शैक्षणिक

व्यवस्था की जाती है। स्व–अध्ययन सामग्री के कारण शिक्षार्थियों को पाठ्य–पुस्तकों को क्रय करने एवं उन्हें अलग से अध्ययन करने की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं संवर्द्धन के महायज्ञ में सम्मिलित इस विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को उन चुनौतियों का ध्यान दिलाना आवश्यक समझता हूँ जो इस विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण होंगी।

आज के दीक्षान्त समारोह में भाग लेने वाले सुधीजनों, आप सब मेरे इस विचार से अवश्य सहमत होंगे कि शिक्षार्थी का सर्वतोमुखी विकास केवल कम्प्यूटर, प्रबन्धन तथा विज्ञान के अंगों की शिक्षा से ही संभव नहीं है। इसका अलग महत्व है, इसे नकारा नहीं जा सकता। लेकिन हमारा, आपका–सबका यह भी

परम दायित्व है कि हम अपनी सांस्कृतिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा नैतिकता आदि की प्राचीन विरासत को याद रखें, उसे भूलें नहीं। उसे सहेज कर चलें और हम उसे आगे बढ़ायें।

आप, हम–सभी यह जानते हैं कि देश व प्रदेश के विकास का मापदण्ड केवल यही नहीं है कि वहाँ कितने धनी व्यक्ति रहते हैं वरन् यह है कि वहाँ के नागरिकों को उनके जीवन जीने भर के लिए कम से कम मौलिक सुविधायें मिल रही हैं या नहीं। रोटी, कपड़ा और मकान हम उन्हें उपलब्ध करा पा रहे हैं या नहीं। शिक्षा को इस सामाजिक दायित्व को पूरा करने में शामिल होना चाहिए। हमारी जिम्मेदारी यह भी है कि उच्च शिक्षा के साथ–साथ सस्ती तथा आमजनों के लिए सर्व सुलभ शिक्षा कुछ इस प्रकार प्रदान की जाए जिससे लोग कम से कम अपने जीवनयापन की

व्यवस्था कर सकें। विश्वविद्यालय को इस दिशा में सार्थक प्रयास करने चाहिए।

मेरी मान्यता है कि इस मुक्त विश्वविद्यालय को अपनी शैक्षणिक व्यवस्था और अधिक छात्रोन्मुखी करनी चाहिए। उच्च शिक्षा की सभी प्रक्रियायें जैसे प्रवेश, शिक्षण, परीक्षा, शोध आदि सर्वतः छात्रोन्मुखी होनी चाहिए। छात्रोन्मुखी व्यवस्थायें छात्रों की कठिनाइयों को कम करेंगी। इस प्रकार की व्यवस्थाएँ करने के लिए शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार अधिसंरचना के सृजन में नीतिगत निर्णय लेने होंगे। इसके लिए ऑनलाइन प्रवेश, ऑनलाइन शिक्षण एवं ऑनलाइन परीक्षा की व्यवस्था को यथासम्भव लागू करने का प्रयास करना चाहिए। यह विश्वविद्यालय इसके लिए प्रवेश एवं परीक्षा में लगातार नए प्रयोग कर रहा है।

इसी कड़ी में गत वर्ष से स्थलीय प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है। यह प्रयोग इस वर्ष दस अध्ययन केन्द्रों पर किया गया है। इसे और आगे बढ़ाया जाना चाहिए। स्थलीय प्रवेश प्रक्रिया में शिक्षार्थी को प्रवेश हेतु अध्ययन केन्द्रों पर मात्र एक बार आना पड़ता है और उन्हें प्रवेश के समय ही अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा दी जाती है। परीक्षाएँ प्रदेश के हर कोने में स्थित लगभग 80 परीक्षा केन्द्रों के माध्यम से आयोजित की जाती हैं। मूल्यांकन व्यवस्था के अन्तर्गत पाठ्य–सामग्री के अन्तर्गत सतत स्वमूल्यांकन, सत्रीय मूल्यांकन एवं सत्रांत मूल्यांकन द्वारा शिक्षार्थियों में लगातार सम्बन्धित विषय में ज्ञान एवं दक्षता को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन अभी इस विश्वविद्यालय को इस दिशा में बहुत कार्य करना है। पुस्तकालयों को ई–जर्नल के माध्यम से जोड़ना

होगा और अध्ययन सामग्री को ऑनलाइन माध्यम से शिक्षार्थियों तक पहुँचाना होगा। क्षेत्रीय केन्द्रों एवं अध्ययन केन्द्रों को प्रभावपूर्ण ढंग से दूरस्थ शिक्षा के इस अभियान में शामिल करना होगा।

मैं इस विश्वविद्यालय से अपेक्षा करता हूँ कि यह विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों को प्रदेश की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने की दिशा में सम्यक् प्रयास करेगा। प्रदेश की भाषा, परिवेश एवं स्थानीय उद्योग–धन्धों की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रमों को तैयार कर लागू करेगा। इस विश्वविद्यालय को अपने विस्तार कार्यक्रम और मजबूत करने होंगे। स्वास्थ्य, कृषि, पंचायती राज, शिशु–कल्याण आदि क्षेत्रों में नये कार्य करने से विश्वविद्यालय, समाज के और नजदीक पहुँचेगा और उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल

परिवर्तन होगा। हमारे देश के पास ज्ञान की खोज के लिए मानव–प्रयासों का पाँच हजार वर्ष से अधिक पुराना इतिहास है। हमारा समाज हमेशा ज्ञानवान समाज रहा है। अब चुनौती यह है कि इसे ज्ञान अर्थव्यवस्था के रूप में किस प्रकार परिवर्तित किया जाए। यह सत्य है कि आने वाले वर्षों में हमारी सबसे बड़ी ताकत मानव संसाधन होंगे। भली–भाँति प्रशिक्षित युवा महिलाओं और पुरुषों का विशाल समूह भारत की प्रगति के लिए उसकी सबसे बड़ी ताकत बन सकता है। मुझे विश्वास है कि हमेशा सैन्य शक्ति ही किसी देश को महान नहीं बनाती, बल्कि यह बौद्धिक शक्ति ही भारत की महानता को दर्शाएगी। मुझे यकीन है कि उत्तर प्रदेश के छात्रा एवं छात्रायें इस बौद्धिक शक्ति के प्रतीक के रूप में पूरे देश में विद्यमान रहेंगे।

मेरी मान्यता है कि भौतिक अधिसंरचना को अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ाना चाहिए। प्राचीन भारत में गुरुकुल व्यवस्था थी, जिसमें छात्रों का सर्वांगीण विकास होता था और छात्र ज्ञान, मूल्य और दक्षता हासिल कर समाज और राष्ट्र की सेवा में अपना अमूल्य योगदान देते थे। मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि इस विश्वविद्यालय ने संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए पहले से स्थापित महाविद्यालयों की अधिसंरचना को अपने अध्ययन केन्द्रों के लिए प्रयोग किया है और छात्रों के पास जाकर अपना अध्ययन केन्द्र खोलकर छात्राकुल की एक नई अवधारणा का विकास किया है। इस प्रकार विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य इस विश्वविद्यालय के मूल वाक्य "हम पहुँचें वहाँ, पहुँचा न कोई जहाँ" के संकल्प को प्रदेश के हर कोने में पहुँचा रहे हैं। विश्वविद्यालय

एवं सम्बद्ध अध्ययन केन्द्रों को अपनी तकनीकी शिक्षा पर अधिक ध्यान देना होगा और इसके साथ ही साथ भारतीय आदर्श मूल्यों की शिक्षा जैसे – आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, समन्वयता, सार्वभौमिकता, विविधता में एकता, सतत निरन्तरता, अनुशासन, शुचिता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास पर भी ध्यान देना होगा। इस व्यवस्था को अविरल गति देने का कार्य कुशल शिक्षक ही कर सकते हैं। इस विश्वविद्यालय के शिक्षक स्वयं अनुशासित एवं अपने कार्य में दक्ष होकर शिक्षार्थियों के अन्दर सत्यं, शिवं एवं सुन्दरम् के प्रत्यय प्रतिस्थापित करने का अनवरत प्रयास करते रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

हमें दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मेरे संज्ञान में आया है कि दूरस्थ शिक्षा परिषद् के दिशा–निर्देशों

के अनुसरण में इस विश्वविद्यालय ने **Centre for Internal Quality Assurance Cell (CIQA)** गठित करने की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाए हैं। केन्द्र सरकार ने भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी देशवासियों को शिक्षा का अवसर सुलभ कराने का संकल्प लिया है। इस दिशा में इस विश्वविद्यालय को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस विश्वविद्यालय की शिक्षा–व्यवस्था में लागत प्रभाविता तो है ही, साथ ही इसमें प्रवेश, पाठ्यक्रम, परीक्षा आदि में भी लचीलापन है। इस प्रकार की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को परम्परागत विश्वविद्यालय पूरा नहीं कर सकते। यह विश्वविद्यालय समाज की आवश्यकता के अनुसार नए पाठ्यक्रमों की प्रासंगिकता सिद्ध कर उन्हें लागू करने की नीति अपनाता है। विश्वविद्यालय पहली बार पुराछात्रा सम्मेलन आयोजित करने जा रहा है। इसके

लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इन सत्प्रयासों के लिए साधुवाद देना चाहूँगा।

शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव है। इसलिए विश्वविद्यालय को अपनी शिक्षा व्यवस्था को समय के साथ सुदृढ़ करने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। शिक्षित हो जाना ही शिक्षा के अर्थ को पूर्ण नहीं करता। सच्चे अर्थों में शिक्षार्थी वही है जिसके अन्दर शिष्टाचार, अनुशासन, विश्व बन्धुत्व की भावना, सृजनात्मकता, जागरूकता, आशावादिता एवं सज्जनता जैसे मूलभूत गुण निहित हों। इस मुक्त विश्वविद्यालय के प्रांगण से, मैं आह्वान करता हूँ कि यहाँ कि शिक्षक और अधिकारीगण इस मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के लिए इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु दृढ़ संकल्पित हों।

हमें शिक्षित बेरोजगार युवाओं, विशेषकर उत्तर प्रदेश के शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस नए वातावरण में यह जरूरी है कि कौशल को निरन्तर उन्नत बनाया जाए, हमारे ज्ञान संस्थानों में प्रथम श्रेणी की बुनियादी सुविधायें उपलब्ध कराई जायें और शिक्षण एवं प्रशिक्षण की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए। संयोग से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में नई उपलब्धियों की बदौलत ऐसी सुविधायें आज जितनी आसानी से और कम निवेश के साथ कायम की जा सकती हैं, वैसा पहले सम्भव नहीं था। हमें उस उद्यमशीलता को भी पुनः प्रतिष्ठित करना होगा जिसके लिए उत्तर प्रदेश का सम्पूर्ण क्षेत्र विख्यात रहा है। मेरी इच्छा है कि प्रदेश को रोजगार के अवसर

पैदा करने वालों का क्षेत्र माना जाए, न कि रोजगार मांगने वालों के। हमें उम्मीद है कि यह परम्परा न केवल बनी रहेगी बल्कि और पुख्ता होगी। इस काम में विश्वविद्यालय शैक्षिक जगत् और उद्योग जगत् के बीच एक रचनात्मक सम्बन्ध कायम कर और व्यापार–विकास इन्क्यूबेटर स्थापित कर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे। तकनीकी शिक्षा के साथ–साथ शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रमों में कौशलयुक्त एवं मूल्यपरक शिक्षा का समावेश करना चाहिए जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो, साथ ही दक्षता एवं व्यावहारिक गुणों से युक्त शिक्षा प्रदान की जा सके और वे अपने अन्दर लेखन, वाचन, व्याख्यान, कला, कम्प्यूटर दक्षता आदि गुणों को विकसित कर सकें। मूल्यपरक शिक्षा का समावेश

करने से उनके अन्दर ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और राष्ट्र–प्रेम जैसे गुणों में वृद्धि की जा सकेगी।

आपमें से कुछ ने अपनी पढ़ाई में एडमंड बर्क की यह टिप्पणी पढ़ी होगी कि "बुराई की जीत के लिए केवल एक ही चीज की दरकार होती है और वह यह है कि अच्छे लोग कुछ न करें।" अतः बुराई न जीत सके इसके लिए एक नागरिक के रूप में आप शिक्षार्थियों में से प्रत्येक को अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिए और इस प्रकार हमारे प्रशासनिक ढाँचे के इस महत्वपूर्ण पहलू को सुदृढ़ करने में भागीदार बनने के लिए मैं आपका आह्वान करता हूँ।

अन्त में मैं सभी मानद उपाधि प्राप्तकर्ता तथा अन्य सभी शिक्षार्थियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने आज उपाधियाँ प्राप्त की हैं।

मैं आपके उज्जवल भविष्य और उद्देश्यपूर्ण जीवन की कामना करता हूँ।

धन्यवाद – नमस्कार।